सुख दरवाजे खड़ा हुआ....

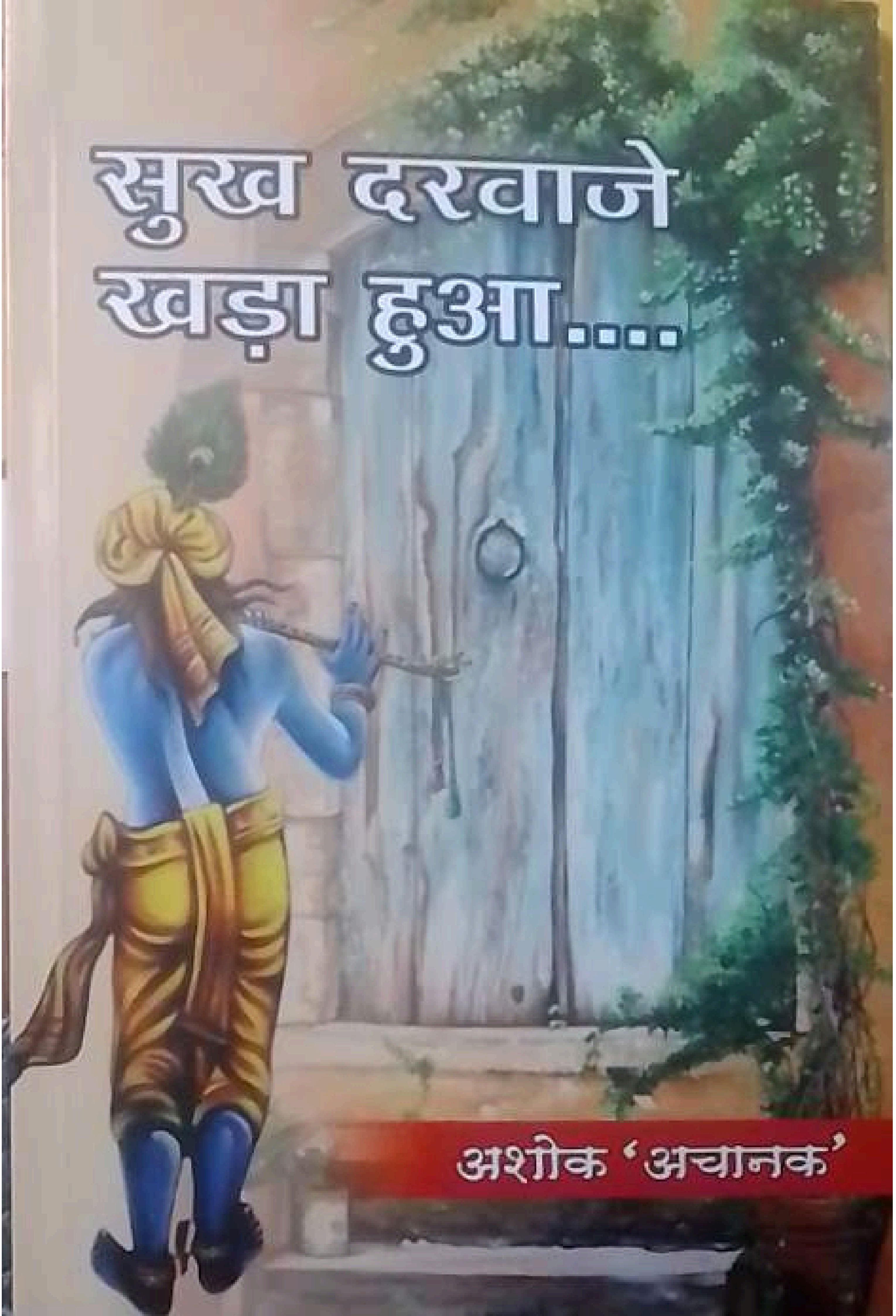

अशोक 'अचानक'

सुख दरवाजे खड़ा हुआ...

© अशोक गुप्त 'अचानक'

प्रकाशक

एच.एस.आर.ए. पब्लिकेशन्स
नंबर 2, श्री अन्नपूर्णेश्वरी निलय, पहला मेन रोड,
बसवेश्वरनगर, लगगेरे,
बेंगलुरू-560058
बिक्री मुख्यालय- बेंगलुरू

ISBN: 978-93-5506-128-7
First Edition 2022
No. of Pages - 100
₹ 200.00

लेखक की सहमति से पुस्तक के प्रकाशन के समय इस बात का भरसक प्रयास किया गया है कि प्रकाशित सामग्री पूरी तरह से त्रुटि-रहित हो। समीक्षा लेख एवं रिव्यू आर्टिकल में प्रयुक्त वाक्यांशों के अतिरिक्त लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई अंश किसी माध्यम में प्रयोग करना या पुनुरुत्पादित करना प्रतिबंधित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक किसी भी माध्यम में इस पुस्तक या उसके किसी अंश का भंडारण, रिकॉर्डिंग या फोटो कॉपी करना प्रतिबंधित है।

अनुक्रम

मंगलाचरण 19

1. माँ 21

2. मैं कवि हूँ कविता करता हूँ 23

3. मैं हवा का रुख बदलना जानता हूँ 24

4. मैं क्या जानूँ ? 25

5. माना थोड़ा आकर्षण है 26

6. मैं अपनी धड़कन लिख डालूँ 27

7. जीवन कैसे बीत गया 28

8. पतझर आएगा झर जाओगे 29

9. खुलकर बात नहीं होती 31

10. वक्त की पदचाप 32

11. बेसुरे बोल रहे हैं 34

12. गीत मेरे भी सजा लो 35

13. आपका विश्वास जीता हूँ 36

14. मरघट के भूत 37

15. बार-बार मेरी कविता पढ़ोगे 39

16. बीन बजाता चल 40

17. जिन्दगी के उसूल 41

18. भिखारी से भ्रष्टाचार तक 42

19. भ्रष्टाचार 45

20. अपनी कुर्सी बचाने के लिये 48

21. स्वयं पर शोध करो 49

22. गिद्ध और सिद्ध 51

23. कितनी बार निबन्ध लिखे 53

24. पूरे घर में आग लगा देगा 54

25. कुण्डी खोलो 56

26. आओ झांके उनके घर में 57

27. शर्म करो कुछ माली 58

28. आग से पत्थर जलेंगे 59

29. मन बुझा हुआ और चेहरा उदास 61

30. मन के अन्दर हवन कुण्ड है 63

31. बदली को लट बिखराने दो 64

32. क्या है किसके मन में 65

33. खुद को बचाइए 66

34. बाकी सभी कुशल मंगल है 67

35. सावन आयो 69

36. लागे जगह-जगह पर आग.. 70

37. कहाँ रहते हो गाँव में 71

38. देह देहरी पर खड़ी है.. 72

39. राष्ट्र भाषा 73

40. अनजाने आग सी बरस गयी 74

41. सपना 75

42. मैं फिर आऊँगा.. 76

43. आधुनिक व प्राचीन नारी.. 78

44. तुम रुको यहीं पर नृत्य करो 79

45. कल सुबह महाकवि हो जाऊँ 80

46. दीपावली.. 81

47. आओ होली खेलें 82

48. मुक्तक मंजरी 83-100

अशोक 'अचानक'

माँ - श्रीमती किशोरी गुप्ता

पिता - स्व. श्री मुन्नालाल गुप्ता

जन्म - 10 अक्टूबर 1960, कुठौंद, जिला - जालौन (उ.प्र.)

शिक्षा - एम. कॉम

सम्प्रति - बैंक ऑफ बड़ौदा में वरिष्ठ प्रबन्धक के पद से सेवा निवृत्त

अन्य - कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर काव्य पाठ, पत्र-पत्रिकाओं में लेखन व विभिन्न सम्मानों से अलंकृत

निवास - K-415 आवास विकास योजना, केशवपुरम, कल्याणपुर, कानपुर

सम्पर्क - 7985194923

ई-मेल - achanakashok1960@gmail.com

12 वर्ष की आयु में विद्यार्थी जीवन में अपनी प्रथम रचना 'मैं भ्रमर हूँ' से अपनी काव्य यात्रा प्रारम्भ करने वाले रचनाकार **अशोक 'अचानक'** अनवरत स्वान्तः सुखाय काव्य यात्रा के पथ पर चलकर देश व समाज को विभिन्न बिंदुओं पर वैचारिक मंथन से सुखद अनुभूतियाँ देने हेतु प्रयासरत हैं। ईश्वर की असीम कृपा से उनके द्वारा रचित गीतमाला 'सुख दरवाजे खड़ा हुआ...' सुधी पाठकों को सौंपकर असीम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पुस्तक निश्चित रूप से पाठकों के अन्तर्मन को झकझोरते हुए उन्हें सुखद अहसास देगी व आनन्द पथ पर ले जाने में सक्षम होगी।

-प्रकाशक

HSRA Publications

9 789355 061287

Poetry ₹ 200

www.hsrapublications.com